Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 15-01-2024, Accepted: 06-02-2024, Published: 28-02-2024
Volume 5, Issue 1, 2024, Page No. 1-2

विद्यापति और उनका युग का ऐतिहासिक एवं विश्लेशणात्मक अध्ययन

प्रमिला
विभाग हिन्दी, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोतक, रेवाड़ी हरियाणा, भारत

सारांश
विद्यापति संक्रमण काल के कवि है विद्यापति की रचनाओं पर इस संक्रमण का प्रभाव परिलक्षित होता है। उन्होंने चरित काव्य भी लिखे, श्रृंगार के पद भी लिखे और भक्ति में भी लीन हुए। संक्रमण काल के कवि होने के नाते विद्यापति का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। विद्यापति के समय में भारत में आमतौर पर दिल्ली सल्तन्त का शासन था। उनके जीवन काल में दिल्ली में तुगलक वंश और लोदी वंश का शासन रहा। विद्यापति–युगीन समाज सामंती समाज था। समाज, वर्ण, जाति और वर्ग में विभाजित था। आर्थिक और सामाजिक रूप से विपन्न लोगों का दमन और शोशण होता था। राजा, महाजन और व्यापारी सुखी थे। 'कीर्तिलता' में इस तथ्य का उल्लेख है कि हिन्दू–मुस्लमान साथ–साथ रहते थे। हिन्दू समाज में जाति व्यवस्था और विवाह पद्धति और भी विकृत हुई। एक तरफ धन था दूसरी और गरीबी। समाज में आर्थिक विशमता बहुत गहरी थी। दास की स्थिति बहुत खराब थी। किसानों की हालत कुछ बेहतर थी। विद्यापति की रचनाएँ खासकर कीर्तिलता, कीर्ति पताका, और पदावली अपने समय के जीवंत दस्तावेज है। मध्ययुगीन इतिहास लिखने में इनका सार्थक उपयोग किया जा सकता है।

मूल शब्दः विद्यापति संक्रमण, राजनीतिक परिस्थिति, तत्कालीन समाज

विद्यापति का युगः इतिहासकारों के बीच प्रायः मान्य है कि विद्यापति सन् 1360 से 1480 के बीच मौजूद थे। अनेक दृष्टियों से यह संक्रमण काल माना जाता है। विद्यापति की रचनाओं की अंतर्कथा एवं अंतर्वस्तु पर तथा साहित्य, समाज और राजनीति के इतिहास पर ध्यान देने से संक्रमण की प्रक्रिया और विद्यापति की रचनात्मक विशेशताओं के बीच घना संबंध दिखायी पड़ता है।
जो लोग विद्यापति की पदावली का भक्तिपरक अर्थ निकालने की कोशिश कर रहे थे, उन पर व्यंग्य करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'इतिहास में कहा था कि आजकल आध्यात्मिकता के चश्में बहुत सस्ते हो गए है। अतः विद्यापति की मूल प्रवृति और उनके समय की विकासमान प्रवृति में एक तरह से अंर्तविरोध था। यही साहित्यिक एवं ऐतिहासिक कारण है कि आचार्य शुक्ल उन्हें फुटकल खाते में रखते हैं इससे विद्यापति का काव्यात्मक एवं ऐतिहासिक महत्व कतई कम नहीं होता, बल्कि उनकी विशिश्टता ही प्रमाणित होती है, वे युगांतर के कवि थे।

राजनीतिक परिस्थितिः विद्यापति के समय में भारत में आमतौर से दिल्ली सल्तन्त का राज था। इससे स्पश्ट रूप से कहा जाए कि विद्यापति के जीवन–काल में दिल्ली पर तुगलक और लोदी वंश का शासन था। देश भर में फैली स्थानीय सत्ताएं सल्तनत का प्रभुत्व स्वीकार कर चुकी थी। भारतीय राजनीति और समाज में धार्मिक दृश्टि से दो समुदाय हिन्दू और मुसलमान अस्तित्व में आ गए थे। इस नई बात ने राजनीति में भी नयापन ला दिया। कीर्ति पताका में राजा शिव सिंह और सुलता का युद्ध वर्णित है। युद्ध में शिव सिंह को विजयी दिखाया गया है। इस विजय के फलस्वरूप राजा शिव सिंह की कीर्ति–पताका चारों तरफ फहराती है। राजा की शक्ति सेना और युद्ध जीतने की क्षमता में निहित रहती थी।

सामाजिक स्वरूपः राजतंत्र राजनीतिक व्यवस्था कायम करने के अलावा समाज में सामंतवादी व्यवस्था की रक्षा करता था। इस तरह प्रजा का दोहरा शोशण होता था। कीर्तिलता और लिखनावली में इस बात का उल्लेख मिलता है कि मिथिला का समाज सामंतवादी था। इसलिए सामाजिक विशमता कई रूपों में मौजूद थी, जिसकी अभिव्यक्ति राजनीति और समाज में कई तरह से होती रहती थी। आर्थिक और सामाजिक दृश्टि से निचले तबके के लोग राजनीतिक सत्ता के लाभ से तो वंचित थे ही, उसके दमन के भी शिकार होते थे।
तत्कालीन समाज वर्णों जातियों और वर्गों में विभाजित था। राजनीतिक अस्थिरता का सामाजिक स्थिति पर प्रतिकूल असर पड़ता था, जिसका लाभ ऊंचे तबके के लोग ही उठाते थे और निचले तबके के लोगों का संकट बढ़ जाता था। विद्या और ज्ञान की भूमि होने के बावजूद मिथिला में भी धन ही सामाजिक प्रतिश्ठा का मुख्य आधार थ। जहां पच्चीस विवाह एक पुरूश करता था वहां स्त्रियों की दुर्दशा का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। विद्यापति युगीन समाज वर्ग विभाजित था। राजा और सामंत प्रभुत्व में थे। व्यापारी और महाजन भी सुखी–सम्पन्न थे। व्यापारी और महाजन भी सुखी –सम्पन्न थे। किसान, खेत–मजदूर और दास शोशित वर्ग के अंग थे। सामाजिक विशमता और अंतविरोध का यह मुख्य रूप था।

इतिहासः साहित्य के आधार पर इतिहास लिखने की पद्धति अपने देश में हाल में ही अपनाई गई है। लेकिन वास्तविकता यह है कि प्राचीन भारत का इतिहास भी पहले साहित्यिक कृतियों के आधार पर ही लिखा गया। जिस साहित्य में यथार्थ–चित्रण की प्रवृति मिलती है, वहीं साहित्य खास तौर से इतिहास लेखन का आधार बनता है। कीर्तिपताका में मिथिला के राजा गणेशवर सिंह और असलान का युद्ध फिर असलान के खिलाफ लड़ने के लिए कीर्ति सिंह के द्वारा सुलतान की मदद लेना ऐतिहासिक घटनाएं है। इसी तरह कीर्तिपताका में राजा शिव सिंह और सुलतान का युद्ध भी कथा को ऐतिहासिकता प्रदान करता है।
विद्यापति के बारें में ऐतिहासिक रूप से स्वीकृत है कि वे राजा शिव सिंह के दरबार में रहते थे। उनकी पदावली में भी बार–बार राजा शिव सिंह और उनकी रानी लखिमा देवी का जिक्र आता है, जिससे विद्यापति और राजा शिव सिंह के संबंध की ऐतिहासिकता प्रमाणित होती है।

विद्यापति की भाशाः विद्यापति की मातृभाशा और मिथिला की सामाजिक–सांस्कृतिक भाशा भी मैथिली ही थी। विद्यापति ने अपनी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना पदावली मैथिली में ही रची

विद्यापति अवहट्ट को देशी बोली के साथ मिलाकर उसमें रचना करते थे। कवि का उद्देश्य रचना को अधिकाधिक प्रेशणीय बनाना है। इसलिए वह पंडिताऊ भाशा को जनता की बोलचाल की भाशा के नजदीक ले जाता है। विद्यापति की अवहट्ट भाशा अयोगात्मकता में आधुनिक भारतीय भाशा हिन्दी के बहुत निकट आ गई है।

निष्कर्ष

विद्यापति की रचनाओं में उनका युग बोलता है उनकी भाशा पर भी युग का पूरा प्रभाव है। आदिकाल में अपभ्रंश से मुक्त होने और देशी भाशाओं के उदय की प्रवृति मिलती है। विद्यापति भी इस युग के प्रतिनिधि कवि है। विद्यापति का युग आदिकाल के अवसान का युग था। भक्तिकाल का आरंभ नहीं हुआ था और आदिकाल की क्षमताएं चुक रही थी। दहलीज पर खड़ा कवि आदिकाल की पूरी परम्परा से जुड़ा था और नए युग के आगमन का संकेत भी दे रहा था इसलिए कीर्तिलता और कीर्तिपताका जैसे प्रशस्ति काव्य ग्रंथ लिखे गए, 'पदावली' जैसी श्रृंगारिक उक्तियाँ अभिव्यक्त की गई और राधा तथा कृश्ण का स्मरण कर कवि ने बता दिया कि आने वाला युग भक्ति को समर्पित है।

विद्यापति की इस व्यापकता में विविधता नूतनता और प्रयोग भी परिलक्षित हो सकता है और कहीं–कहीं इन सभी प्रवृतियों के बीच अंतर्विरोध भी नजर आ सकता है। विद्यापति की रचनाओं में उनका युग प्रतिबिम्बित हुआ है। कीर्तिलता, कीर्तिपताका और लिखनावली मध्यकालीन भारत के इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण स्त्रोत बन सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, वीरेन्द्र– श्रीवास्तव, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।
2. विद्यापति, शिव प्रसाद सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 989।
3. विद्यापति युग और साहित्य, इन्द्र कांत–झा, इन्द्रालय प्रकाशन, पटना।